बाबा बने न्यायाधीश और वकील

✻ राजेन्द्र कुमार मारवीजा, रायपुर

सन् 2005 से मैं नियमित रूप से ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय ज्ञान सुनने जाता हूँ। हमने सन् 1995 में जिनसे घर खरीदा, वे घर के सामने ही रहते हैं। एक दिन न्यायालय के नजूल विभाग से एक कागज आया जिससे हमें ज्ञात हुआ कि हमारे साथ धोखा हुआ है और हमारा नामांतरण नजूल विभाग में न होने के कारण उस सामने वाले व्यक्ति के मन में लोभ आ गया है। वह मुझसे अनावश्यक रूप से रुपयों की मांग करने लगा। हर रोज़ मानसिक प्रताड़ना, जान से मारने की धमकी और लौकिक पुत्र संजय (14 वर्ष) का अपहरण करने की धमकी देने लगा। यह मामला न्यायालय में पहुँच गया। कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि ऐसे बैठे बिठाये मुसीबत आ सकती है और वो भी उनके द्वारा जिनसे अच्छे सम्बन्ध हों। रुपयों के लालच में इंसान इतना बदल जाता है, फिल्मों में देखा था, वास्तविक जीवन में यकीन नहीं आ रहा था।

जुल्म और धमकी

न्यायालय में केस चलते भी उस व्यक्ति ने जुल्म करने बंद नहीं किये। इस दहशत में मेरी माताजी ने बीमार होकर बिस्तर पकड़ लिया। मैं रोज़ अमृतवेले बाबा से यही रूहरिहान करता था, बाबा, सबसे बड़े न्यायाधीश तो आप हैं, आप ही वकील भी बन जाओ, मेरे साथ न्याय करो। एक दिन मैंने देखा, बाबा कह रहे हैं, बच्चे क्यों घबराते हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। एक दिन उस व्यक्ति ने पुलिस वाला बनकर मुझे फोन द्वारा एक सुनसान जगह पर आने को कहा। उसी समय मुझे आवाज़ आयी, सावधान बच्चे। मेरा सर घूमने लगा, ऐसे लगा, कोई शक्ति मुझे संभाल रही है। मैंने हिम्मत जुटाई, मोबाइल लेकर मैं जिलाधीश के पास चला गया। फिर पुलिस के द्वारा नम्बर ढूंढ़ा गया और वही व्यक्ति पकड़ा गया। उसे जेल हो गई। जेल से छूटने के बाद फिर धमकी दी कि ठीक एक महीने के बाद तुम्हारी हत्या करूँगा। पर कहते हैं, 'जिसके सिर ऊपर तू स्वामी सो दुख कैसे पावे।'

मेरे पक्ष में आदेश

मैं रोज़ सवा पाँच बजे सेवाकेन्द्र जाने के लिए घर से निकल जाता हूँ। घर में माँ और युगल कहने लगे, इतनी जल्दी जाते हो, कहीं अंधेरे का लाभ उठा कर वह कुछ कर न दे। मैं

माँ और युगल को कहता था, पहले भी भगवान ने ही तो मुझे बहुत बड़े दुख से निकाला था, अब भी वही निकालेगा। मैं सेवाकेन्द्र जाता रहा। कुछ दिनों के बाद अचानक ही उस व्यक्ति को पता नहीं क्या हुआ, उल्टियाँ करने लगा, उसे हास्पिटल ले जाया गया, डाक्टरों ने आपरेशन कराने को कहा, आपरेशन हुआ और वह शरीर छोड़ कर चला गया। मार्च, 2013 को मेरे पक्ष में आदेश जारी हुआ। मेरे भोलेनाथ बाबा ने जज और वकील बनकर मेरी मदद की। इस दौरान बाबा ने न्यायालय में भी सेवा करवाई। **मैंने इस घटना से यही सीखा कि परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए। परिस्थितियाँ हमें बहुत कुछ सिखा कर अनुभवी बनाती हैं।** ❖